उपेन्द्रवज्रा छन्द

उपेन्द्रवज्रा छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण-

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।

अर्थात् जिस छन्द में क्रमशः जगण, तगण, जगण और उसके बाद दो गुरुवर्ण आवें, उसे उपेन्द्रवज्रा कहते हैं।

उदाहरण-

अलं महीपाल तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्।

न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।।

विशेष-

क)इस छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं ।

ख) इस छन्द का स्वरुप इस प्रकार से है:

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

जगण तगण जगण दो गुरु

ग) यति चरणान्त में होती है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi